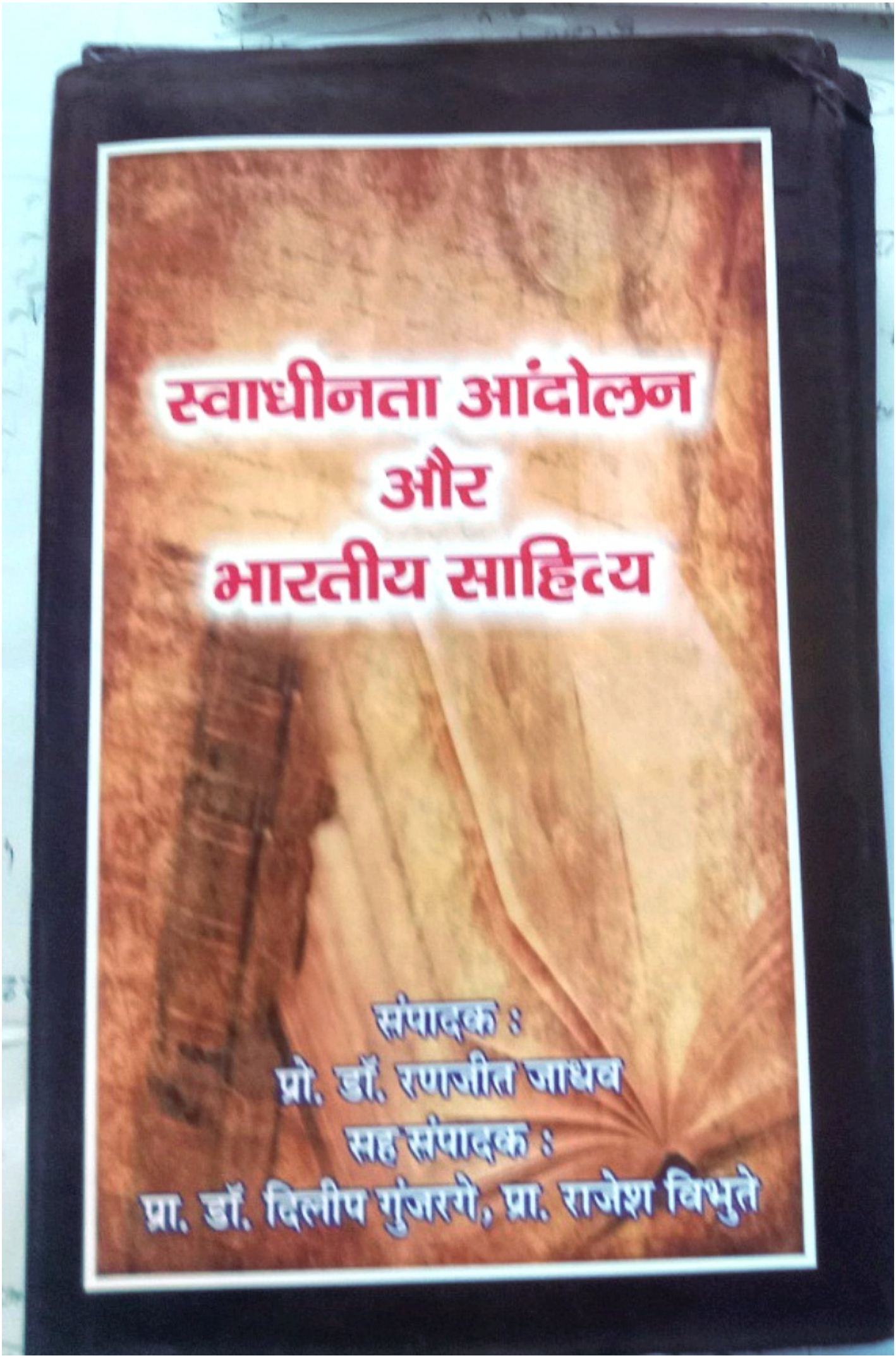

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

स्वाधीनता आंदोलन और भारतीय साहित्य

संपादक :
प्रो. डॉ. रणजीत जाधव
सहसंपादक :
प्रा. डॉ. दिलीप गुंजरगे, प्रा. राजेश विभुते

शैलजा प्रकाशन
कानपुर

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

पुस्तक : स्वाधीनता आंदोलन और भारतीय साहित्य
संपादक : प्रो. डॉ. रणजीत जाधव, प्रा. डॉ. दिलीप गुंजरगे,
प्रा. राजेश विभुते
© : लेखक
प्रकाशक : **शैलजा प्रकाशन**
प्रकाशक एवं वितरक
57 पी., कुंज विहार, II यशोदा नगर, कानपुर -11
Mob.: 8765061708, 9451022125
E-mail : shailjaprakashan@gmail.com
ISBN : 978-81-954734-9-6
संस्करण : प्रथम 2022
मूल्य : ₹ 725 /-
शब्द साज : शिखा ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : अनिका डिजिटल, कानपुर

Swadhinta Andolan Aur Bhartiya Sahitya

by : Dr. Ranjit Jadhva

Price : Seven Hundred Twenty five Only.

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

31. स्वाधीनता आन्दोलन और हिन्दी फिल्में 175
-डॉ. ज्ञानेश्वर देशमुख
32. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी उपन्यास :
(कर्मभूमी और गोदान के संदर्भ में) 178
- प्रा. डॉ. सादिकअली हबीबसाब शेख
33. डॉ. अंबादास देशमुख का हिंदी भाषा को योगदान 182
- प्रा. नयन भादुले-राजमाने
34. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी भाषा 187
-प्रा. डॉ. अभिमन्यु नरसिगराव पाटील
35. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा का योगदान 193
- प्रा. डॉ. गिरि डी.व्ही.
36. स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी एवं मराठी पत्र-पत्रिकाओं का योगदान 197
-डॉ. सविता पुंडलिक चौधरी
37. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी फिल्में 206
-डॉ. गणपत श्रीपतराव माने
38. भारतीय फिल्में और स्वाधीनता संग्राम 209
श्री. ज्ञानेश्वर विनायकराव बोडके
39. यशपाल के उपन्यासों में स्वाधीनता आंदोलन 213
-प्रा. अमोल ज्ञानोबा लांडगे
40. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी फिल्में 217
-श्री किशोर श्रीमंत ओहोळ
41. स्वाधीनता आंदोलन में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान 222
प्रा. परमेश्वर माणिकराव वाकडे
42. आधुनिक हिंदी उपन्यास और स्वाधीनता आंदोलन 226
-प्रा. डॉ. बालाजी रामराव गायकवाड
43. हिंदी पत्रकारिता : समाज सुधार तथा स्वाधीनता आंदोलन 233
- डॉ. सूजीत सिह परिहार

मराठी

44. आदिवासी मराठी कादंबरी आणि स्वातंत्र्य संग्राम 238
-प्रा. नवनाथ निवृत्ती बेंडे
45. जळता गोमंतक मधून घडणारे गोतमंतकीय स्वातंत्र्य
संग्रामाचे चित्रण 243
-प्रा. उगम उमेश परब

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

42

आधुनिक हिंदी उपन्यास और स्वाधीनता आंदोलन

प्रा.डॉ.बालाजी रामराव गायकवाड

किसी भी साहित्यकार के अनुसार साहित्य की सर्जनाका एक मुल मंत्र होता है "अथातो सत्य जिज्ञासा" के अतिरिक्त अन्य कुछ नही है | अर्थात काव्य, कहाणी, नाटक और उपन्यास आदिके रुप में साहित्यकार अपनी अभिव्यक्ति पाता है | साहित्यकार अनेकानेक माध्यमोंसे स्वयं को उद्घाटित करके अंतरिक एवं बाह्य जगत में विद्यमान सत्य के शोध मे सर्वथा प्रवर्त रहता है | भारतीय स्वातंत्र्य संघर्ष के संदर्भ मे यह बात सहज ही परिपुष्ट होती है | हिंदी उपन्यास का राष्ट्रीय आंदोलनके विविध पक्षोंकी उपेक्षा न करसका राष्ट्रीय आंदोलन के चेतना के अंतरीक और बाह्य निरुपण को उसने अपना विषय बनाया है | देश और काल के साथ सामंज्यस्य स्थापित करते हुए जीन स्वातंत्र्य संग्राम के ऐतिहासिक तथ्य को उपन्यासकार ने ग्रहण किया, उनका वैविध्यपुर्ण चित्रांकन आधुनिक उपन्यासोंमे किया गया है |

प्रत्युत विषय "हिंदी आधुनिक उपन्यासों मे स्वाधिनता आंदोलन" यह बहोत विस्तृत होणे के कारण मैने स्वाधिनता आंदोलन की उपन्यासों मे आयी हुयी केवल एक झांकी मात्र लेने का प्रयास किया है जिसमे विशेषकर गांधीजीका "असहयोग - सत्याग्रह आंदोलन" गांधीजीने गोपाल कृष्ण गोखले के निर्देशन मे राष्ट्रीय कॉग्रेसके अधिवेशनों मे भाग लेने लगे | दक्षिण अफ्रिकाके चलाए गये आंदोलन के सफलता के कारण भारतीय जनमन पर उसके व्यक्तित्वका विशेष प्रभाव दिखाई देता है |

'चंपारण्य सत्याग्रह' तथा 'अहमदाबाद मजदूर आंदोलन' की सफलताने सफल भूमीकाने स्वातंत्र्य संघर्ष के लिए एक नवीन युग का प्रारंभ किया इसलिए भारतीय जनता ने बापूका राजनितीमे प्रवेश करणा हार्दिक स्वागत किया | गांधीजी के अहिंसात्मक सत्याग्रह आंदोलन ने न केवल भारतीय जनमानस को ही प्रभावीत किया अपितू भारतीय साहित्य में भी विशेषकर हिंदी साहित्य मे और उपन्यासों मे उनका प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है | उनके राजनैतिक प्रवेश से संपूर्ण देश मे जो सुखद प्रतिक्रया हुई इसपर अनेक उपन्यास कारोंका मत है |

अ - राजाराधिकारनम प्रसाद सिंह बापू के राजनीति मे प्रवेश का अंकन करते हुए लिखते है "1920 का साल जालियावाला बाग की आग अभी बूझी नही तबतक महात्मा गांधीने राष्ट्र के अंतर मे नवीन चेतना का जादू फुंका है" । जालियावाला बाग की भयंकर मानसिक वेदना से बापू भी अपने को अलग न रख सके | अग्रेजों के इन्ही

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

अपरोधोंका अंत करणे के लिए उन्होंने असहयोग सत्यागृह के अस्त्र का प्रयोग किया और उसका भारतीय जनजीवन पर इतना गंभीर प्रभाव पडा की, इससे ब्रिटिश सत्ता की नींव हिलने लगी | इससे प्रेमचंद ने तो सरकारी नौकरी का त्यागपत्र दे दिया था | गांधीजी ने न वकील, न अपील, न दलिल के साथ, स्कुल तथा कॉलेजों का भी बहिष्कार और सरकारी नौकरीयों से त्यागपत्र दिया था |

आ - नागार्जुन का एक पात्र बलचनमा पूछता है "असहयोग क्या होता है भैय्या?" 2 भैय्या असहयोग का अर्थ समझाते हूए कहते है - "गांधी महात्माने यह तरीका निकालाथा कि,दुश्मन अगर ताकतवार हो तो तूम लाठीसे उसका मुकाबला नही कर सकते हाँ उससे बोलचाल बंद करदो उसके किसी काम मे मदत न पोंहचाओ, दुश्मन दच्छिन की ओर मुह करके खडा रहे तो तूम पिठ फेरकर अपना मुह उत्तर के तरफ कर दो |" 3

इ - बाबा बटेसरनाथ असहयोग आंदोलन की कथा सुनाथे हुए कहते है कि, "बेटा गांधीजी अपनी अहिंसा के आगे और सत्य व आत्मशुध्दी के आगे बाकी बातों की परवाह शायद ही करते है | जल्द से जल्द स्वराज हासिल करणे के लिए 1920 के अंत मे कॉग्रेस ने असहयोग और बहिष्कार का नया लडाकू प्रोग्राम अपनाया था | बडे नेताओं के इस निर्णय से साधारण जनता मे उत्साह की अनोखी लहर चल गई |" 4

ई - डॉ. शेफाली का प्राणनाथ कहता है कि, "मै जिन दिनों पाँचवी छटी में पडता था उन्ह दिनों मे ही असहयोग आंदोलन मे मैने पढना छोड दिया था" | 5 इसलिए मुझे दो बार जेल हो गई थी भूले बिखरे चित्र का फरहतुल्ला भी गांधीजी के आंदोलन मे चला जाता है | और "फरहतुल्ला ने एलान कर दिया कि, महात्मा गांधी और कॉग्रस के हुक्म से उन्होंने आज से वकालत छोंड दी यही नही थानेदार विक्रम सिंह ने भी अपनी नौकरी से इस्तेफा दे दिया"6 इसका परिणाम यह हूआ कि, गॉववाले स्वंय झगडा निपटाने लगे |

उ - प्रेमचंद ने भी 'रंगभूमी' मे बापू के असहयोग सत्याग्रह की भावना का अंकन करणे का प्रयास किया है | मिसेज सेवक कुंवर साहब को निमंत्रण देती है | पर राष्ट्रीय आंदोलन से प्रभावीत होकर कुंवर साहब का कथन है कि, "मुझे खेद है कि, मै उस उत्सव मे संमिलित न हो सकूंगा मैने वृत्त कर दिया है कि, राज्याधिकारियों से कोई संपर्क न रखुंगा" 7 पदवियों नौकरी योंसे त्याग पत्रकी जो हलचल असहयोग आंदोलन मे चल रहि थी उसका संकेत भी रंगभूमी पर दिखाई देता है |

1 - खिलाफत आंदोलन

उसन्यास कारोंने असहयोग आंदोलन की प्रत्येक घटनाओं और रचनाओं मे चित्रित करणे का प्रयत्न किया है | परंतू कुछ मुख्य मुख्य घटनाओं का ही यहाँ विश्लेषण संभव है | सर्व प्रथम "खिलाफत आंदोलन" पर मुनसी प्रेमचंद्र ने प्रकाश काश डाला है |

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

इसका कारण समझाते हुए जनसेवक कहता है "सफलता में दोषों को मिटानेकी विलक्षण शक्ति है आप जानते है दो साल पहले मुस्तफा कमाल क्या था ? बागी देश उसके खुन का प्यासा था | आज वह अपने जाती का प्राण है क्यों ? इसलिए कि वह सफल मनोरथ हूआ है | लेकिन कई साल पहले प्राण भय से अमेरिका भागा था आज व प्रधान है इसलिए उसका विद्रोह सफल हूआ" | 8 खिलाफत आंदोलन का सुत्रपात ही 'कमालपाशा' के पक्ष का समर्थन करने के लिए हुआ था | प्रेमचंद्र का उपर्युक्त चित्रण सामाईक प्रसंग का द्योतक है |

'प्रत्यागत' का कथान तो खिलाफत आंदोलन से ही निर्वाहित हुआ है | मंगल दास के कारण ही बांदा जिले में खिलाफत आंदोलन को बल मिलता है | दादाजी उसका विरोध करते हूए पुछते है - "ब्राम्हण का लडका होकर तू खिलाफत विलायत के झगडों मे क्यो पडता है? देश का इससे क्या उपकार होगा रे?" 9 मंगलदास बोला दादाजी जिन-जिन बातों से अंग्रेज परेशान हो, उन-उन बातों से देश को लाभ होगा जब पुन्ह मंगलदास से पूछा जाता है, यह खिलाफत है क्या? "मंगलदास समजाता है ठिक-ठिक यह क्या है सो तो मुसलमान भी नही बतला सकते परंतू हिंदू मुसलमानों मे इसका कारण बहोत मेलजोल पैदा हुआ है, देश के लिए यह कम कल्याणकारक नही है" |

आखिर यह लढाई है कीस बात की ?

"इस बात की कि मुसमानों के एक बडे भारी पूरुष का जो टर्की मे रहते है | अंग्रेज ने अपमानित किया है और उनका राज्य छिन लिया है उन्ही के लिए हिंदू मूसलमान अपना पूरा बल लगा रहे है |" 10

वर्माजीने उपर्युक्त वार्तालाभ के व्दार 'खिलाफत आंदोलन' का यथार्थवादी चित्रण किया है जो एक ऐतिहासिक सत्य है |

2 - चौरी - चौरा हिंसात्मक घटना - काण्ड

असहयोग आंदोलन शीघ्र ही हिंसात्मक रुप मे परिवर्तित हो गया था | उत्तर भारत में चौरी-चौरा कि हिंसात्मक घटनाओं ने महात्मा गांधी को सहयोग अहिंसात्मक सत्याग्रह को वापस लेने के लिए मजबूर किया था | गांधीजी ने शीघ्र ही चौरी-चौरा घटनापर विचार करने के लिए कॉंग्रेस कार्य समिती की बैठक बुलाई और असयोग आंदोलन को स्थापित कर दिया |

हिंदी उपन्यासों मे उसकी अभिव्यक्ति अनेकानेक रूपों मे हूई है |

'रंगभूमि' में सर्वप्रथम असहयोग आंदोलन की असफलता का विश्लेषण करते हूए प्रेमचंद कहते है - " सच्चे खिलाडी कभी रोते नही, बाजी पर बाजी हारते है, चोटपर चोट खाते है, धक्के पर धक्के सहते है पर मैदान पर डटे रहते है | खेल मे रोना कैसा? खेल हसने के लिए दिल बहलाने के लिए है, रोने के लिए नही है " | 11 खेल में संघर्ष मे इतना स्वाभाविक है जब दो खिलाडी खेलते है तो हार जीत तो होती ही है |

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

सुरदास चौरी-चौरा जैसे हिंसात्मक घटनाका विरोध भी करता है | उसका सत्यागृहीयोंसे कहना है कि - " आप लोग वास्तव मे मेरी सहायता करने के लिए नही आये है, मुझसे दुष्मनी करने के लिए आए हैं | हासिमों के मन मे, फौज के मन मे, पुलिस के मन मे जो दया और धर्म का खयाल आता है उसे आप लोगोंने क्रोध बनादिया है | मै हकिमों को दिखा देता हूं कि एक दिन अंधा आदमी एक फौज को कैसे पिछे हटा देता है, तोफ का मुह कैसे बंद कर देता है, तलवार की धार से कैसे मोड देता है | मै धरम के बल से लढना चाहता था" | 12

चौरी-चौरा मे सत्यागृहियों के थानेपर हमला करके पुलिस कर्मचारीयों को जिंदा जला दिया था | 'कायाकल्प' मे भी उसी घटना की छाया गृहन की गई है | चक्रधर के नेतृत्व में राजासाहब के विरूध्द मजदूरों का आंदोलन हिंसात्मक रूप गृहन कर लेता है | - "राजा साहब बंदूक लेकर चक्रधर के पिछे दौडे उनका जमीन पर गिरना बाकी पाँच हजार आदमी बाडे को तोडकर सशस्त्र सिपाहियोको चिरते हूए बाहर निकल आ गय और नरेशों के कैम्प के ओर चले | रास्ते मे जो कर्मचारी मिला उसे पिटा गया | मालूम होता है कि, कैम्प मे लूट मच गई है... चारों तरफ भगदड मच गई है |" 13

यही नही सत्यागृही तीन अग्रेंजों को मौत के घाट उतार देते हैं इसमे हिंसा की लार टपकने लगती है और चौरी-चौरा में पूलिस कर्मचारी हिंसा का शिकार होते हैं |

'रैन अंधेरी' उपन्यास में इबादत हूसैन चौरी - चौरा का मनन करते हुए कहता है कि - जब चौरी चौरा वाली वार्दात हूई तभी मै समझ गया था कि इसमे कोई चाल है नही तो भला गोरखपुर जिले के देहातियों की क्या मजला कि पुलसवालों को घेरकर मार दे|

'निर्देशक' के रचनाकार ने भी चौरी चौरा का चित्रण किया है | सन 1922 का वह प्रवाह एकाएक रुक गया | एक सुबह गांधीजी खून के लाल धब्बे पाकर चौक उठे |... आंदोलन जहाँ का तहाँ खडा कर दिया गया | चौरी-चौरा जैसी हिसात्मक घटनाओं का विरोध 'कर्मभूमि' मे भी मिलता है | संभव है उसी घटना से उपन्यास कारने उसे ग्रहन किया हो |

3 - मोप्ला उपद्रव -

महात्मा गांधीने 'असहयोग आंदोलन के दौरान हिंदू मुसलमान एकता कि जो माला पिरोही थी वह असहयोग आंदोलन के स्थगन के कारण बिखरने लगी क्यों कि जनता एक खोकलापन अनुभव करने लगी थी | विदेशी सत्ता भी चूपचाप न थी | मलबार मे मुस्लीम जनता गरीब थी और हिंदू अमीर थै | अमीरी और गरीबी की भावना ने वहाँ मात्र एक कृषक समस्याने सांप्रदायिकता का रुप ले लिया | असहयोग आंदोलन में किसान भी बापू के साथ थे | किसान और जमीनदार का संघर्ष हिंदू मुसलमान का संघर्ष बन गया था |

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

वृषभचरण जैन ने एक गरीब मुसलमान कुतबी के भाओं का अंकन भाई में किया है | "अरे यार इन (गाली) हिंदूओं ने मुसलमानों का सारा रोजी रोजगार खत्म कर दिया"

"हिंदुओं ने ? कैसे ?"

"आज ही लढाई - झगडा सशुरे अपने आप तो झगडा खडा करते है | दोनी भाई तादात मे कम है, बस हिंदूओं के शिकार हो जाते है | दीनी भाई गरीब है | हिंदू भाई अमिर"|14

मंगलदास खिलापत आंदोलन के प्रचार के लिए मलबार पोहूंच जाता है | परंतू हिंदू होने के नाते मुसीबत मे फँस जाता है | " सवेरा होने पर मंगल ने मलबार की गलियों को सुनसान पाया इधर - उधर मकान धधक रहे थे कभी-कभी मोप्लों के लहू - लोहान और धुलि - धुरारित झूंड जय की पूकार लगाते हूए निकल पडते थे | मंगल ने सोचा सचमुच यह मौप्लों का राज्य हो गया है" | 15

4 - सत्यागृह का चित्रण -

महात्मा गांधीने जो 'सत्यागृह आंदोलन' चलाया था उसके स्वरूप का अंकन भी अधिकांश उपन्यासों मे किया गया है | सत्यागृहीयों का पूलिस के सामने धरणा, नारे लगाना, झेंडा फहराना, राष्ट्रीय गीत गाना आदि अनेक कार्य 'सत्यागृह' केही अनुषंगीक थे ब्रिटिश भारत की गोपनीय पत्रावलियाँ सत्यागृह के विविध कार्यों की रिपोर्टोंसे भरी पडी है | इतिहास कारों को इन घटनाओं के विस्तृत वर्णन को जान बुझकर छोडना होता है | वे भी अपनी सिमा से बंद होते है | हिंदी उपन्यासों मे 'सत्यागृह' के कार्यकलाप का बहुविध चित्रण उपलब्ध है | परंतू शोध अध्येयता यहाँ अपनी सिमाओं मे बंधा होने के कारण उस कार्यकलाप की, कुछ झाकियाँ प्रस्तूत करणा चाहेगा |

'रंगभूमि' गांधी 'सत्यागृह' से प्रेरित रचना है | सुर के नेतृत्व मे जो सत्यागृह संपन्न होता है उसका चित्रण इसप्रकार है |

"सुप्रिंटेडने गली के मोडपर आदमीयों का जमाव देखा तो घोडा दौडता उधर चला - तूम सब आदमी अभी हट जाओ, नही हम गोली मार देंगे |

समुह जौ भर भी न हटा |

"अभी हट जाओ, नही हम फायर कर देगा |"

"कोई आदमी अपनी जगा से न हिला | सुप्रिंटेडने तिसरी बार आदमीयों को हट जाने की आज्ञा दि | समुह शात गंभीर स्थिर है" | 16

बापू की गिरफ्तारी का चित्र भी उपन्यासों मे चित्रित हूआ है " गांधी बाबा गिरफ्तार हो गए थे और चारों तरफ उधम मच रहा था | कभी कभी जो कोई शहर से लौटता, बताता है कि, लारियों की लारियाँ भरे, गांधीवाले गिरफ्तार हो रहे है" | 17

रमईपूर के सत्यागृही थानेपर दावा बोल देते है | और उसपर अपना कब्जा कर लेते है | स्वातंत्र्य संघर्ष के इतिहास में कईबार ऐंसा हूआ | सत्यागृहियों के नेता ने रमईपूर

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

के चारों तरफ जितने पुलिस थाने थे सब पर कब्जा कर लिया है | और अपने साथ फौज के समान एक बड़ी भिड़ लेकर लखनौ पर अधिकार जमाने जा रहा है |

'भूले बिसरे चित्र' मे भी राष्ट्रीय आंदोलन का चित्र यथार्थ रूप मे अंकित किया गया है - "उस जुलूस मे आगे कांग्रेस कि झंडीया लिए हुए स्वयंसेविकाएँ थी, जिसमे अन्य स्त्रिया भि संमिलीत हो गई थी | उनके पिछे कांग्रेस के स्वयंसेवक तथा अन्य कार्यकर्ता थे" | 18

'मैला आंचल' का एक सत्यागृही अपने साथीयों को संबोधीत करते हुए कहता है - "पियारे भाईयो, हमने भारत माता का नाम, हमतमाजी का नाम लेना बंद नही किया | तब मिलेटरी ने हमको नाखन मे सुई गडाया, तिस पर भी हम इस बिस नही किए | अखिर हारकर जेलखाना मे डाल दिया गया |... जेहलन ही ससुराल यार हम बिहा करन को जावेंगे |" 19

मेरे देश के सत्यागृही जेल को जाते हुए निम्नांकित गीत गाते है - OI

"भाई विदा करो जाने दो
वही भेज दासत्व पाश माता का कटवाने दो |
जहा तिलक भगवान रहे थे |
करते गीता ज्ञान रहे थे
गांधी, मोती 'लाल' जहाँ है
अली, दास, आझाद जहाँ है
मेरा भी बलीदान तनिक वेदीपर चढ जाने दो" | 20

निष्कर्ष :

सभी साहित्य विधाओं मे संभवत: उपन्यास ही एक ऐसी विधा है जिस में साहित्य का समग्र रुप से चित्रण किया जा सकता है |

उपरयुक्त असहयोग - सत्यागृह आंदोलन - 1 - खिलाफत आंदोलन 2- चौरी-चौरा हिंसात्मक घटना कांड 3 - मोप्ला उपद्रव 4 - सत्यागृह का चित्रण इन बातों का निरक्षण करने से हम यह कह सकते है कि, भारत वर्ष मे पराधिनता के इतिहास का अपना एक विशेष महत्व रहा है | 200 से अधिक वर्षोतक अंग्रेजो की गुलामी झेलने के बाद भारतीय जनता पराधिनता की जंजीरों को तोडने के लिए मचल उठी है |

इस देश में से अंग्रेजों को खदेड देणे के लिए समय समय पर विभिन्न राष्ट्रीय आंदोलन खडे हूए है | जिनमें से असहयोग सत्यागृह आंदोलन एक विशेष आंदोलन है | इस आंदोलन से गांधीजी के अहिंसात्मक सत्यागृह आंदोलन ने न केवल भारतीय जनमानस को भी प्रभावीत किया अपितू भारतीय साहित्य मे विशेषकर हिंदी साहित्य मे विशेष प्रभाव दिखाई देता है और देश वासियों को राष्ट्रीय चेतना में एक नया का जोष निर्माण हो जाता है | इसि बात को अनेक उपन्यास कारों ने अपने उपन्यास साहित्य के

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

माध्यम से जैसे प्रेमचंद, प्रसाद, निराला, बाबा बटेसरनाथ, नागार्जुन, यशपाल अदि उपन्यास कारोंने स्वाधिनता आंदोलन और जनता मे राष्ट्रीय एकता और संघटन के लिए अभुतपुर्व योगदान दिया है।

संदर्भ सुची

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पृष्ठ क्र.
	पुरुष और नारी	राजाराधिकारमन प्रसाद सिंह	04
	बलचनमा	नागार्जुन	100
	बलचनमा	नागार्जुन	100
	बाबा बटेसरनाथ	नागार्जुन	93
	डॉ. शेफाली	उदयशंकर भट्ट	35
	भुले बिखरे चित्र	भगवतीचरण वर्मा	484
	रंगभूमी	प्रेमचंद	179
	रंगभूमी	प्रेमचंद	122
	प्रत्यागत	वृंदावन लाल वर्मा	11
	वधोपरी	वृदांवन लाल वर्मा	12
	रंगभूमी	प्रेमचंद	138
	रंगभूमी	प्रेमचंद	532
	कायाकल्प	प्रेमचंद	118
	भाई	ऋषभरण जैन	61
	प्रत्यागत	वृंदावन लाल वर्मा	67
	रणभूमी	प्रेमचंद	512
	विशाद मठ	रांगे राघव	12
	भूले बिखरे चित्र	भगवतीचरण वर्मा	546
	मैला आँचल	फणीश्वरनाथ 'रेणू'	32
	मेरा देश	धनीराम प्रेमह:	07

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz